इकाई 32 युद्धोत्तर विश्व की झलक

इकाई की रूपरेखा

32.0 उद्देश्य

यह इस पाठ्यक्रम की अन्तिम इकाई है। इस इकाई में युद्ध के अंत में यूरोप में मौजूद राजनीति और अर्थव्यवस्था के विभिन्न पक्षों की जानकारी दी जाएगी। इसे पढ़ने के बाद आप :

- यूरोप में तात्कालिक युद्धोत्तर परिस्थिति के बारे में जान सकेंगे;
- युद्धोत्तर काल में विभिन्न यूरोपीय देशों में राजनीति अर्थव्यवस्था की प्रकृति का पता लगा सकेंगे; और
- यूरोप के घटनाक्रम में अमेरिका जैसी गैर यूरोपीय ताकतों के प्रभाव की प्रकृति और फैलाव का मूल्यांकन कर सकेंगे।

32.1 प्रस्तावना

इस खंड की इकाई 30 में 31 में आप दोनों विश्वयुद्धों के दो महत्वपूर्ण पक्षों का अध्ययन कर चुके हैं। सबसे पहली बात यह है कि इन दोनों विश्वयुद्धों की एक लम्बे युद्ध के रूप में व्याख्या की जा सकती है जिसकी शुरुआत लगभग 1914 के आसपास हुई और बीच में लम्बे अंतराल के बाद 1945 में फिर से युद्ध की शुरुआत हो गई जिसमें स्पष्ट रूप से विजेता और पराजित पक्ष का निर्णय हो गया। प्रथम युद्ध (या युद्ध का पहला चरण) के कुछ अनसुलझे मुद्दे दूसरे युद्ध में निर्णायक और अन्तिम रूप से सुलझ गए। दूसरी बात यह कि युद्ध मुख्य रूप से यूरोप में लड़ा गया था और यूरोपीय देश इसमें प्रमुख रूप से हिस्सा ले रहे थे (जापान ओर अमेरिका को छोड़कर) परंतु सही अर्थों में यह युद्ध केवल यूरोप तक ही सीमित नहीं था ... यह पूरी दुनिया में फैला हुआ था। पिछले खंड 7 में आपने यह पढ़ा था कि यूरोप तीन वैचारिक समूहों में विभक्त हो गया था – उदारवादी जनतंत्र (प्रमुख रूप से ब्रिटेन और फ्रांस इसका प्रतिनिधित्व करते थे), फासीवाद (हिटलर के शासन में जर्मनी और मुसोलिनी के शासन में इटली इसका प्रतिनिधित्व करते थे) और समाजवादी दुनिया (सोवियत संघ इसका प्रतिनिधित्व करता था)। इन्हीं तीन शक्तियों ने पृथ्वी पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करने के लिए एक दूसरे से प्रतिस्पर्द्धा की। युद्ध के निर्णायक दौर में उदारवादी जनतंत्र और समाजवादी शक्तियों ने मिलकर तीसरी शक्ति फासीवाद को हराने और समाप्त करने का प्रयास किया।

कुल मिलाकर विश्व युद्ध का यही सार था। युद्धोत्तर काल में बची हुई दो शक्तियों (उदारवादी जनतंत्र और समाजवाद) के बीच बिना किसी युद्ध के कड़ी प्रतिस्पर्द्धा चलती रही। इस इकाई में युद्धोत्तर विश्व के इन्हीं पक्षों पर हम बातचीत करने जा रहे हैं।

32.2 युद्धोत्तर परिदृश्य

महाद्वीपों की अर्थव्यवस्था में परस्पर संबद्ध होने के कारण यूरोप के भीतर वर्चस्व स्थापित करने के लिए लड़ा गया युद्ध वस्तुत: इतिहास के पहले भूमंडलीय युद्ध में परिणत हो गया। इसी कारण युद्ध के बाद के यूरोप के इतिहास को यूरोप से बाहर घट रही घटनाओं से अलग करके नहीं देखा जा सकता है। खासकर इसलिए क्योंकि ये परस्पर सम्पर्क और भी शक्तिशाली और जटिल होते चले गए। परिणामत: 1980 के दशक के अन्त तक यूरोप के भीतर कुछ गैर यूरोपीय ताकतें भी महत्व पा चुकी थीं। उदाहरण के लिए यूरोप के मामले में अमेरिका का बढ़ता प्रभाव, विश्व वित्तीय व्यवस्था में डॉलर का प्रभुत्व और युद्ध के बाद जन्में दो सैन्यीकृत राजनैतिक आर्थिक खेमों के बीच बढ़ती शत्रुता।

32.2.1 तात्कालिक प्राथमिकताएं

कुछ प्राथमिकताएं इस प्रकार थीं : 1) प्रत्येक देश में विश्व युद्ध के कारण उत्पन्न हुए सामाजिक और आर्थिक संकट को सुलझाना। 2) राष्ट्र-राज्यों के मौजूदा पदानुक्रम की वैधता समाप्त होने के कारण महाद्वीपीय स्तर पर यूरोप के राजनैतिक नक्शे को फिर से निर्धारित करना। 3) उपनिवेशों की समाप्ति के कारण पश्चिमी यूरोप को कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा। 4) इन मुद्दों को सुलझाने के क्रम में पूंजीवाद और समाजवाद के बीच का व्यवस्था संबंधी टकराव पूरे यूरोप में फैल गया। इससे पूर्व और पश्चिमी यूरोप के बीच के परम्परागत, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक विभाजन में एक और आयाम जुड़ गया और इसने अगले 40 वर्षों में यूरोप में होने वाली घटनाओं को प्रभावित किया।

जिन प्रथम तीन प्रक्रियाओं का ऊपर उल्लेख किया गया है वे एक साथ मिल गईं और उनकी अभिव्यक्ति यूरोप के दो भागों या पूर्व-पश्चिम विभाजन द्वारा हुई। यूरोप के भीतर भी शक्ति संतुलन सोवियत संघ के पक्ष में झुकने लगा जो पूर्वी यूरोप में अपना पूर्ण नियंत्रण स्थापित करना चाहता था। युद्ध के दौरान सोवियत संघ और आंग्ल-अमेरीकी गठबंधन ने यूरोप को दो हिस्सों में बांट लिया था और एक दूसरे के क्षेत्र में हस्तक्षेप न करने पर सहमत हो गए थे। पश्चिमी यूरोपीय शक्तियां, खासकर यूनाइटेड किंगडम की युद्ध के कारण वित्तीय हालत काफी खराब हो गई थी और अब वह महाशक्ति नहीं रह गई थी। इसके बाद काफी हिचक और सीमित उत्साह से वे अमेरिका की अधिशेष पूंजी पर आश्रित हो गए। उन यूरोपीय देशों को जो रणनीतिक गणित के दायरे से बाहर पड़ते थे कूटनीतिक तटस्थता से लेकर व्यावहारिक द्वैधता जैसी नीतियां अपनाने की स्वतंत्रता थी। केवन जर्मनी के भाग्य का निर्णय ही खेमों के टकराव का परिणाम था। इसके परिणामस्वरूप दो राज्यों का निर्माण हुआ – पश्चिम जर्मनी या फेडरल रिपब्लिक ऑफ जर्मनी और पूर्वी जर्मनी या जर्मन डेमोक्रेटिक रिपब्लिक। बहुत दिनों तक ये एक दूसरे के अस्तित्व को अस्वीकार करते रहे। पूरे यूरोप में युद्ध के राजनैतिक और आर्थिक परिणाम एक जैसे नहीं थे। ब्रिटेन और सोवियत संघ के कुछ हिस्सों को छोड़कर राष्ट्रीय राजनीति की नई पद्धतियां और नए अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र संबंधी मतभेद उभर कर सामने आए। जर्मनी के कब्जे वाले क्षेत्रों में युद्ध के दौरान राजनैतिक रूप से प्रतिबद्ध सशस्त्र प्रतिरोध समूहों को संगठित किया गया। इसके साथ ही साथ देश से निष्कासित इन क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाली राष्ट्रीय सरकारें मित्र राष्ट्रों के साथ मिलकर एक दबाव समूहों का काम करने लगीं। वैचारिक और कभी-कभी जातीय टकरावों (जैसे जातीय बहुल युगोस्लाविया) से स्थिति और भी विकट हो गई। फ्रांस में साम्यवादियों के प्रभाव वाले मैक्विस ने जर्मनों के खिलाफ प्रतिरोध को संगठित किया। फ्रांस के बाहर फ्री फ्रेंच और इसकी फ्रांसीसी राष्ट्रीय समिति लंदन से कार्य करती थी और चौथे फ्रांसीसी गणतंत्र की शुरुआत के पहले यह समिति अस्थाई सरकार के रूप में विकसित हुई।

32.2.2 यूगोस्लाविया

युद्धोत्तर व्यवस्थाओं पर मतभेद उभरे और इसके फलस्वरूप वामपंथी प्रतिरोधी खेमे और निष्कासित उदारवादी या दक्षिणपंथी सरकारों में कट्टर शत्रुता विकसित हुई। युगोस्लाविया में दो अलग-अलग दबाव समूहों की उपस्थिति

से स्थिति जटिल हो गई। एक ओर जोसिफ ब्रॉज टिटो के नेतृत्व में कम्यूनिस्ट नेशनल लिबरल फ्रंट था और दूसरी ओर ड्राजा निहैलोविच के नेतृत्व में रोयालिस्ट चेकनिक्स और राष्ट्रवादी थे। राष्ट्रीय राजनीति में इस प्रकार के आधारभूत आन्तरिक टकरावों में बाहरी हस्तक्षेप किसी न किसी रूप में होता ही था। पूर्वी यूरोप में इसने अर्धसैनिक हस्तक्षेप का स्वरूप धारण किया। पश्चिमी यूरोप में प्रतिद्वंद्वी दावेदारों को सत्ता से बाहर निकालने के लिए संस्थागत व्यवस्था के साथ-साथ सैनिक सहायता का सहारा भी लिया गया। पूर्वी यूरोप में की गई व्यवस्था से केवल तात्कालिक संकट को टाला भर जा सका जो 1900 के दशक में उभर कर सामने आ गया और पश्चिमी यूरोपीय संदर्भ में जो समाधान अपनाया गया उससे सरकार को और भी कई संकटों का सामना करना पड़ा और कभी-कभी व्यवस्था पर भी संकट आ गया। युगोस्लाविया साम्यवादियों के लिए अपवाद था जहां उन्होंने लाल सेना की सहायता के बिना ही सत्ता प्राप्त कर ली। इसके बाद यह सोवियत खेमे में शामिल हो गया और बाद में अपनी इच्छा से यह इससे बाहर हो गया। अन्ततः इसके पड़ोसी देशों के समान इस देश में भी जातीय विभाजन हुआ और व्यवस्था बिखर गई।

32.2.3 पोलैंड

युद्ध के दौरान पोलैंड को जर्मनी और सोवियत संघ ने आपस में बांट लिया था। अतः आरंभ में यहां जर्मन और सोवियत विरोध की भावना होना स्वाभाविक था। राष्ट्रवादी होम सेना लंदन में स्थित निष्कासित सरकार के सहयोग से काम कर रही थी परंतु 1944 में वार्सा आंदोलन की असफलता के बाद जर्मनी ने इसे ध्वस्त कर दिया। सोवियत कब्जे वाले पोलैंड में साम्यवादी नेतृत्व में पोलिश कमिटी ऑफ नेशनल लिबरेशन ने आगे बढ़ती हुई सोवियत लाल सेना की मदद से स्थिति को अपने अस्थाई नियंत्रण में ले लिया। घरेलू सेना (होम आर्मी) के विघटन के बाद यह राष्ट्रीय एकता की अस्थाई सरकार पर वर्चस्व स्थापित करने में सफल हुई जिसका गठन लंदन स्थित अस्थाई सरकार और सोवियत कब्जे वाले पोलैंड की सरकार (जिनकी पहले आपस में प्रतिद्वंद्विता थी) के विलयन से हुआ था।

32.2.4 ग्रीस

दूसरी ओर ग्रीस में सुधार की प्रक्रिया लम्बी चली और इसमें एक अनिश्चितता भी थी क्योंकि प्रतिरोध साम्यवादी नेतृत्व वाले नेशनल लिबरेशन फ्रंट और दक्षिणपंथी रिपब्लिकन नेशनल डेमोक्रेटिक लीग के बीच बंटा हुआ था। ज्योर्जिएस पैपेन्ड्रियस के नेतृत्व में और ब्रिटिश द्वारा समर्थित राष्ट्रीय एकता की सरकार ने 1944 में नेशनल लिबरेशन फ्रंट पर पाबंदी लगाने की कोशिश की। परंतु इससे गृह युद्ध छिड़ गया जिसे 1945 के वर्जिका समझौते के कारण टाला जा सका। चुनावों और जनमत संग्रह में धोखाधड़ी करके रॉयलिस्ट (राजतंत्रवादी) और रॉयल्टी (राजवंशी) सत्ता में आ गए। इससे एक बार फिर गृह युद्ध छिड़ गया और अमेरिकियों ने साम्यवादियों के खिलाफ हस्तक्षेप किया। इसके बाद ग्रीस में जल्दी-जल्दी कई अस्थिर सरकारें बनीं और इनका राजतंत्र से झगड़ा चलता रहा जिसके फलस्वरूप सातवें दशक के मध्य तक सैनिक तानाशाही कायम रही।

परंतु यूरोप में हर जगह ऐसा नहीं हुआ। डेनमार्क, नीदरलैंड और नौर्वे में विरोध आंदोलन अपेक्षाकृत एकीकृत था। युद्धोत्तर राष्ट्रीय राजनैतिक पुनरूत्थान में उनके सामने कोई खास दिक्कत नहीं आई। स्थाई बहुदलीय संयुक्त मोर्चे ने सत्ता संभाली और 'सामाजिक, जनतांत्रिक सर्वसम्मति' के आधार पर सामाजिक कल्याण, वित्तीय स्तर पर आय का हस्तांतरण और एक मध्यमार्गी तथा धीरे-धीरे आगे बढ़ने वाले सामाजिक आर्थिक सुधार लागू करने की प्रतिबद्धता जाहिर की। चुनाव के स्तर पर इस नीति को भारी सामर्थन मिला। युद्धोत्तर समस्याओं के तात्कालिक समाधान की विधि कुछ भी रही हो 1940 के दशक के अन्त तक सोचने और कार्य करने की दृष्टि से पूरे विश्व का पूरब और पश्चिम खेमे के रूप में द्विध्रुवीकरण हो गया। यह केवल अन्तरराष्ट्रीय और घरेलू राजनीति से ही स्पष्ट नहीं था बल्कि विद्वता के स्तर पर और पत्रकारिता के आधारभूत स्तरों पर भी यह समान रूप से अभिव्यक्त होता था। इस प्रकार इसके कारण उस समय के टकरावों, आपसी एकता तथा विरोधों से ध्यान हट गया। जर्मनी और तटस्थ देश कुछ हद तक इसके अपवाद थे। इस प्रकार का स्तरीकरण कभी-कभी भ्रामक भी होता है परंतु राष्ट्रों के अन्तरराष्ट्रीय कूटनीतिक पक्षों और उनकी घरेलू नीति के महत्वपूर्ण पक्षों पर खेमे से जुड़ाव और तनाव का असर अवश्य पड़ता था। उन्होंने महा-राष्ट्रीय परियोजनाओं के उद्भव में भी सहयोग दिया जिसकी विडम्बना यह थी कि इसके विकास के साथ ही खेमे के हिस्सों के बीच मतभेद उभरने लगे। गैर सोवियत खेमे के संबंध में यह बात अधिक स्पष्टता और पारदर्शिता से लागू होती थी।

32.2.5 जर्मनी का विभाजन

जर्मनी का विभाजन इस प्रकार की महा-राष्ट्रीय परियोजनाओं में सर्वाधिक महत्वपूर्ण और संभवत: विशिष्ट था। जर्मनी के संबंध में मित्र राष्ट्र किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचे और बर्लिन पर नियंत्रण के लिए उनके बीच होड़ मच गई जिसे 'रेस फॉर बर्लिन' के नाम से जाना जाता है। इसके फलस्वरूप जर्मनी का चार हिस्सों में विभाजन हो गया और उन्हें चार शक्तियों के हाथों में सौंप दिया गया। यह इस बात का द्योतक था कि जर्मनी के सैनिक और आर्थिक पुनर्निर्माण के संबंध में पश्चिमी खेमे में मतभेद था। इसके साथ ही इससे युद्धोत्तर रणनैतिक प्रतिद्वंद्विता का भी पता चलता है जिसके कारण एक दशक के भीतर दो अलग राज्य स्थापित कर दिए गए।

ब्रिटेन के विरोध के बावजूद फ्रांसीसी अमेरिकी प्रस्ताव में जर्मनी के अनौद्योगीकरण का मुद्दा सामने आया। यह तय किया गया कि जर्मनी में न्यूनतम आवश्यकता की पूर्ति तक उत्पादन किया जाए तथा नुकसान की भरपाई के लिए उपलब्ध हथियारों को जर्मनी के बाहर भेज दिया जाए। अमेरीका और सोवियत संघ के बीच गहराती दुश्मनी के कारण इन परियोजनाओं को बदलना पड़ा। अमेरीका 'पहले अमेरीका' के अपेक्षाकृत अलगाववादी दृष्टिकोण को छोड़कर स्पष्ट हस्तक्षेप की नीति की ओर आगे बढ़ा जिसे 'मुक्त विश्व के नेतृत्व' की प्राप्ति के रूप में देखा गया। इसके बाद ही ट्रूमैन सिद्धांत ने 'सशस्त्र अल्प संख्यकों या बाहर के दबावों का विरोध कर रही जनता को मुक्त करने' का समर्थन किया और मार्शल योजना द्वारा जिसे आधिकारिक तौर पर यूरोपीयन रिकवरी प्रोग्राम के नाम से जाना जाता है, पूरे यूरोप (पश्चिमी जर्मनी सहित) के पुनर्सृजन और पुनर्निर्माण का प्रयास किया गया। मार्शल योजना अमेरीकी डॉलर की सर्वोच्चता को दृढ़ करने और व्यापार बंधनों को तोड़ने के नए मुद्रा संबंधित और व्यापारिक ढांचे पर आधारित थी। ब्रिटेन वुड्स की संस्थाओं (विश्व बैंक और अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा कोष) और गैट (जेनरल एग्रीमेंट ऑन टैरिफ ट्रेड) के द्वारा व्यापारिक बंधनों और सीमाओं का अतिक्रमण किया गया।

इसी के तहत पश्चिम जर्मनी के आर्थिक पुनरूत्थान का प्रस्ताव सामने आया। 1946 की उद्योग योजना के स्तर को जिसने उत्पादन स्तर को 1938 के स्तर से आधा कर दिया था, निरस्त कर दिया गया। राजनैतिक सुधार के तहत बहुदलीय चुनाव कराए गए, मजदूर संघों पर सख्त नियंत्रण स्थापित किया गया और 'अवांछित' राजनैतिक प्रवृत्तियों को दूर कर दिया गया। मुद्रा सुधार के द्वारा पुराने राइखमार्क के स्थान पर नए डेख मार्क को लागू किया गया। 1949 में फ्रांस, ब्रिटेन और अमेरीका के बीच समझौता हुआ और इनके आधिपत्य क्षेत्रों को मिलाकर फेडरल रिपब्लिक ऑफ जर्मनी (पश्चिम जर्मनी) का निर्माण किया गया। परंतु जर्मन गणतंत्र को 1955 के बाद ही संप्रभुता प्रदान की गई। संप्रभुता देने के पहले इसकी सैन्य शक्ति काफी कम कर दी गई और इसे नाटो में शामिल कर लिया गया। सोवियत आधिपत्य वाले क्षेत्र या पूर्वी जर्मनी में भी पुनर्रचना की यही प्रकिया चली और वहां सोवियत व्यवस्था लागू की गई। 1949 में यह नया राज्य बना। यहां साम्यवादी दल का वर्चस्व कायम हुआ। लोकप्रिय जन आंदोलनों को दबा दिया गया। विकास के लिए सोवियत पद्धति अपनाई गई। अविभाजित जर्मनी की राजधानी बर्लिन का भी विभाजन किया गया और यह विद्वेष का कारण बना रहा। 1948 में इस पार से उस पार आना जाना बंद हुआ और 1961 में दीवार बना दी गई।

दोनों खेमों की शत्रुता के संदर्भ में प्रत्येक खेमे द्वारा अपने को और मजबूत करने के लिए महा-राष्ट्रीय परियोजनाएं लगातार बनाई जाती रहीं। यूरोप में साम्यवादी गतिविधियों को संयोजित करने के लिए 1947 में पूरब में कौमिनफॉर्म की स्थापना की गई। परंतु इसके पश्चिम यूरोप में प्रविष्ट कर जाने के कारण 1956 में दोस्ती का संकेत देते हुए इस पर रोक लगा दी गई। अधिक आर्थिक एकीकरण के लिए 1949 में काउंसिल ऑफ मुचुअल इकोनोमिक एसिसटेंस (कॉमेकॉन) की स्थापना की गई जबकि सैनिक संयोजन के लिए 1955 में वार्सा संधि की गई। इनसे अलग-अलग गुट बने और इनमें कई देश शामिल हुए। 1949 में नाटो (नॉर्थ एटलांटिक ट्रीटी ऑरगनाइजेशन) की स्थापना की गई जो एक अखिल महाद्वीपीय सैन्य संस्था थी। 1951 में विशिष्ट आर्थिक सरोकारों से युक्त यूरोपीयन कोल ऐंड स्टील कम्यूनिटी का गठन किया गया। दूसरी तरफ 1957 में यूरोपीयन इकोनोमिक कम्यूनिटी के उद्देश्य विस्तृत थे तथा संप्रभुता की हानि की आशंका के कारण ब्रिटेन ने 1959 में यूरोपीयन फ्री ट्रेड एसोसिएशन (एफ्टा) की शुरुआत की। विद्वेष के माहौल में हुआ पुनर्निर्माण काफी हद तक इन एजेंसियों पर आधारित था।

बोध प्रश्न 1

1) जर्मनी के दो राष्ट्र-राज्यों में विभाजन की प्रक्रिया का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

....

2) युद्ध के बाद यूरोपीय देशों की तात्कालिक प्राथमिकताओं पर पांच पंक्तियां लिखिए।

....

....

....

....

....

....

32.3 युद्धोत्तर यूरोप में आर्थिक पुनर्निर्माण

युद्ध से लगभग सभी यूरोपीय देशों को आर्थिक नुकसान पहुंचा। इसलिए सबसे पहला कार्य उन नुकसानों की भरपाई करना और आर्थिक विकास को युद्ध पूर्व के स्तर तक पहुंचाना था। आर्थिक समृद्धि के स्तर को प्राप्त करना दूसरा चरण था। उदारवादी जनतांत्रिक और समाजवादी दुनिया में आर्थिक पुनरूत्थान और विकास की यह प्रक्रिया अलग-अलग तरीके से आगे बढ़ी। आइए, सबसे पहले देखें कि यूरोप के उदारवादी जनतांत्रिक हिस्सों में क्या हुआ।

32.3.1 पूंजीवादी यूरोप में अर्थव्यवस्था : पुनरूत्थान और उत्कर्ष

1945 से लेकर 1947 तक आर्थिक पुनरूत्थान के पहले चरण का आरंभ मुख्य रूप से अमेरिकी ऋण और अनुदान तथा संयुक्त राष्ट्र राहत और पुनर्वास एजेंसी के जरिए वितरित खाद्यान्न सहायता से हुआ। औद्योगिक मंदी और खराब फसल होने के कारण अर्थव्यवस्था में जो लड़खड़ाहट आई थी उसे बचाने में इससे काफी सहायता मिली और अर्थव्यवस्था को गिरने से बचा लिया गया। युद्ध-पूर्व स्तर तक पहुंचने के लिए ये सहायताएं पर्याप्त थीं। अमेरिका के दो प्रमुख दीर्घावधि उद्देश्य थे, पहला एक ऐसी मुद्रा और व्यापारिक व्यवस्था का निर्माण करना जिसमें बिना किसी प्रतिबंध के पूंजी और वस्तुओं का आवागमन हो सके और दूसरा एक ऐसे राजनैतिक सैनिक मित्रों का गुट तैयार करना ताकि किसी की सुरक्षा पर आंच न आए। परंतु यूरोप अमेरिका के कर्ज में दबा हुआ था और वहां डॉलर का अभाव था। अमेरिका के उपर्युक्त किसी भी उद्देश्य की पूर्ति आर्थिक विस्तार के बिना संभव नहीं थी ।

पुनरूत्थान के दूसरे चरण, 1948-1951, में अमेरीका द्वारा समर्थित पुनरूत्थान और उत्कर्ष कार्यक्रम में भाग लेने के इच्छुक यूरोपीय देशों को 13 बिलियन डॉलर प्राप्त हुए। इसके अलावा अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और अन्तरराष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक (विश्व बैंक) ने 1 बिलियन डॉलर ऋण प्रदान किया। ब्रिटेन, फ्रांस, इटली और पश्चिम जर्मनी को इस कार्यक्रम से सबसे ज्यादा फायदा मिला। इन अनुदान प्राप्त करने वाले राष्ट्रों का एक अन्तरराष्ट्रीय निकाय स्थापित किया गया। यह यूरोपीय आर्थिक सहयोग का एक संगठन था जिसमें प्रत्येक राष्ट्र को प्रत्येक 4 वर्षों में अपनी राष्ट्रीय योजना प्रस्तुत करनी थी। अनुदान प्राप्त करने वाले इन राष्ट्रों को 'प्रतिपक्ष' धारा के तहत प्राप्त सहायता के बराबर घरेलू मुद्रा कोष उपलब्ध कराना होता था

और इसे अमेरीकी योजना के तहत खर्च करना होता था। उन्हें इस बात पर भी राजी होना पड़ता था कि प्राप्त अनुदान से वे केवल अमेरिका से ही अनाज खरीदें चाहें दूसरे स्रोतों से यह सस्ता ही क्यों न प्राप्त हो रहा हो। उन्हें अमेरीकी जहाजरानी सेवा को बाध्य होकर प्रयोग करना पड़ता था और अनुदान से खरीदी गई वस्तुओं का 50 % बीमा करना पड़ता था तथा अमेरीकी तेल व्यापार से संबंधित हितों को भी वरीयता देनी पड़ती थी।

1947 और 1951 के बीच पश्चिमी यूरोपीय अर्थव्यवस्था में वित्तीय सुधार आया। हालांकि पूरे यूरोप में कार्य निष्पादन और नीति पर अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग ढंग से बल दिया गया था परंतु कुछ विशेषताएं सामान्य थीं : राज्य द्वारा अर्थव्यवस्था का प्रबंधन, ऊर्जा, परिवहन और बैंकिंग जैसे प्रमुख क्षेत्रों का राष्ट्रीयकरण और कीमतों में गिरावट जैसी नीतियां (जिसके कारण सरकार के व्यय और ऋण पर प्रतिबंध लगा दिया गया था) जिससे बेरोजगारी में वृद्धि हुई। इससे एक बड़ी आर्थिक तेजी आई जो 1970 के दशक तक चली। नीतियों से लोगों को रोजगार मिले तथा 1970 के दशक के बाद लगभग पूर्ण रोजगार की स्थिति बन गई। इससे लगभग पूर्ण रोजगार , उच्च उत्पादकता, उच्च मजदूरी और व्यापक सामाजिक कल्याण के 'नए पूंजीवाद' का उद्भव हुआ। इनके परिणामस्वरूप स्पष्ट रूप से वर्ग प्रतिरोध घटा और सहमतिजन्य राजनीति का उदय हुआ। यूनाइटेड किंगडम की बेवरिज रिपोर्ट और दूसरे देशों के ऐसे ही महत्वाकांक्षी समाज कल्याण कार्यक्रमों के कारण सरकारी खर्च तेजी से बढ़ा; जबकि 1947-1951 मितव्ययिता के वर्ष रहे। इस प्रकार के खर्चों से मांग बढ़ी और निवेश में वृद्धि हुई; इसी समय संतुलित बजटों के हित में कर राजस्व भी बढ़ाया गया। औद्योगिक और कृषीय गतिविधि भी बढ़ाई गई; निर्यात बढ़ा, जिससे अमेरीका के साथ व्यापार घाटे में कमी आई, संग्रहण में वृद्धि हुई।

परंतु पूरे पश्चिमी यूरोप में इसके परिणाम एक जैसे नहीं थे। आयरलैंड, स्पेन और पुर्तगाल जैसे कम विकसित देश अधिक विकसित अर्थव्यवस्थाओं की अपेक्षा गुणात्मक और परिमाणात्मक परिर्वानों से कम प्रभावित हुए थे। विभिन्न देशों के बीच विकास और जीवन स्तर के साथ-साथ आय वितरण पद्धतियों में भी अंतर था। आशानुरूप आर्थिक प्रबंधन, राज्य हस्तक्षेप, योजना की भूमिका और परिष्कृति, प्रत्येक अर्थव्यवस्था में राज्य और निजी उद्योगों का अनुपात, राज्य नियोजकों और संघों के बीच के संबंध और कार्य करने के तरीके तथा सामाजिक कल्याण के तरीके तथा अनुपात में भी काफी अंतर था। इसी प्रकार यूरोपीय देशों में अलग-अलग समयों पर आर्थिक तेजी आई और इसमें भी विभिन्नता थी। कहीं-कहीं यूरोपीय देशों को वार्षिक मंदी, व्यापार असंतुलन, खराब फसल आदि जैसे आर्थिक संकटों का भी सामना करना पड़ा। इन सबके बावजूद 1950 और 1970 के दशक के आरंभ तक यूरोप ने उत्पादकता और जीवन स्तर के क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति की। इससे यह अवधारणा सामने आई कि एक नए प्रकार के प्रबंधन-युक्त पूंजीवाद की स्थापना हो चुकी थी। यह पूंजीवाद के आन्तरिक संकटों और भयावह चक्रीय प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त कर सकेगा तथा सरकार के हस्तक्षेप से आम समाज कल्याण को प्रभावी बनाया जाएगा।

परंतु 1973 में यह व्यापक तेजी का दौर समाप्त हो गया। तेल उत्पादक देशों ने तेल की कीमतें एकतरफा और नाटकीय रूप से बढ़ा दी। यूरोपीय अर्थव्यवस्थाओं में मुद्रास्फीति का दबाव बढ़ने लगा, उत्पादन कम हुआ और बेरोजगारी बढ़ी। उन्होंने तुरंत आर्थिक प्रबंधन की मौजूदा व्यवस्था की सीमाओं के भीतर प्रतिबंधात्मक नीतियां लागू कीं और धीरे-धीरे अपने आर्थिक नजरिए को बदलने का प्रयास किया। 1970 के दशक के उत्तरार्ध से एक देश के बाद दूसरे देश में सामाजिक जनतांत्रिक सहमति बिखरनी शुरू हो गई। नए राजनीतिक कार्यक्रमों में सामाजिक कल्याण को न्यूनतम अनिवार्यता तक प्रतिबंधित कर दिया गया। उन्होंने सरकार के हस्तक्षेप और मांग प्रबंधन का परित्याग कर दिया। उन्होंने बाजार की शक्ति को खुली छूट देने में आई प्रमुख संस्थागत बाधा अर्थात मजदूर संघों को अस्वीकार कर दिया। इन सबसे राष्ट्रीयकृत उद्योगों का निजीकरण हुआ। नियमों की बंदिश कम से कम की गई और मुद्रा से संबंधित तथा आपूर्ति पक्षीय नीतियां अपनाई गई। उदाहरण के लिए पूरे यूरोप में सबसे ज्यादा फ्रांस में राज्य हस्तक्षेप और नियोजन प्रभावी था। 1982-83 की समाजवादी सरकार की अन्तरिम योजना में अधिक से अधिक उद्यमों को राज्य के नियंत्रण में लाया गया और 80 के दशक तक कई व्यवस्थित योजनाएं शुरू की गईं। परंतु 1986 ओर 88 के बीच जैक्वेस शिराक ने इन नीतियों को उलट दिया और व्यापक पैमाने पर निजीकरण किया। आगे आने वाली समाजवादी सरकार ने न तो राष्ट्रीयकरण किया और न ही निजीकरण। वस्तुत: अधिकांश पूंजीवादी यूरोप में एक नए 'मुक्त बाजार' की सर्वसम्मति बनी।

32.3.2 समाजवादी यूरोप में अर्थव्यवस्था

सोवियत संघ की अपेक्षाकृत कम क्षमता के कारण सोवियत खेमे में पुनर्निर्माण का कार्य धीमी गति से हुआ। बाहर से पूंजी कम मात्रा में उपलब्ध थी। जिन शर्तों पर यह पूंजी उपलब्ध थी वह सोवियत व्यवस्था को मंजूर नहीं थी। इसलिए औद्योगीकरण कार्यक्रम के लिए अन्दर से ही पूंजी जुटानी पड़ी। इसलिए सोवियत पुनरूत्थान और उत्कर्ष कार्यक्रमों को अपने मित्रों, जर्मन डेमोक्रेटिक रिपब्लिक और आस्ट्रिया, से 1950 के दशक के मध्य तक हर्जाने की भरपाई के रूप में मदद की जरूरत पड़ती रही। नए सोवियत देशों में राष्ट्रीयकरण के कारण भारी उद्योग की स्थापना में तेजी से वृद्धि हुई। सोवियत नमूने के आधार पर सामूहिक खेती और खेती के सामूहीकरण जैसे सुधारवादी कृषि कार्यक्रमों से कृषि क्षेत्र में संकट पैदा हो गया जिसके कारण खाद्यान्न की कमी हो गई। इस प्रकार पूर्वी यूरोप के देश उत्पादन की नई व्यवस्था के अनुरूप अपने को ढालने में व्यस्त थे तथा उन्हें उन क्षेत्रों में गतिरोध का सामना करना पड़ा जो क्षेत्र पहले पश्चिमी यूरोपीय समृद्धि के आधार बने हुए थे।

सोवियत संघ को छोड़कर पूर्वी खेमे की योजनाबद्ध अर्थव्यवस्थाओं को बहुत निम्न औद्योगिक आधार प्राप्त हुआ। अल्बानिया और बुल्गारिया मुख्य रूप से कृषि प्रधान देश थे और पोलैंड का उत्पादन आधार सिलेसिया और वार्सा तक सीमित था। निवेश संबंधी प्राथमिकताएं राज्य द्वारा तय की जानी थी। राष्ट्रीय योजनाओं में भारी उद्योग के विकास पर अधिक बल दिया गया। इस असंतुलन के कारण उपभोक्ता वस्तुओं की काफी कमी हो गई जबकि पश्चिम में उपभोक्ता वस्तुओं की भरमार थी। हालांकि सामूहिक और राज्य खेती के द्वारा कृषि क्षेत्र में निजी गतिविधि को बिल्कुल कम कर दिया गया, परंतु पोलैंड में अधिकांश कृषि उत्पादन का आधार निजी खेत थे। संक्षेप में, पोलैंड में 1940 के दशक और 1950 के दशक के आरंभ में समूहीकरण पद्धति असफल सिद्ध हुई। युगोस्लाविया में उद्योगों पर राज्य का अधिकार नहीं था बल्कि मुनाफा कमाने के लिए इसे मजदूर परिषद को सौंप दिया गया। संसाधनों की घरेलू अनुपलब्धता के कारण ये देश सोवियत संघ पर काफी हद तक निर्भर थे।

आरंभ में व्यापारिक और आर्थिक संबंध इस क्षेत्र अर्थात पूर्वी खेमे तक ही सीमित रहा। परंतु पूंजी और कृषि उत्पादन खासकर गेंहू की कमी के कारण पश्चिमी देशों पर निर्भरता बढ़ी। पोलैंड और रोमानिया ने 1970 के दशक में पश्चिम से अपने औद्योगीकरण कार्यक्रमों के लिए काफी वित्त लिया परंतु ऋण चुकाने के लिए खर्च में कमी करने जैसे कड़े कदम उठाने पड़े और खाद्यान्नों पर रियायतें हटाने से उनकी कीमतों में बढोत्तरी हुई। बुल्गारिया और हंगरी में उपभोक्ता वस्तुओं की कमी और निवेश को सही जगह आवंटित न किए जाने के परिणामस्वरूप योजना को विकेंद्रित करने और निवेश बढ़ाने के लिए सुधार किए गए। चेकोस्लोवाकिया पर सोवियत आक्रमण के बाद बुल्गारिया में यह कार्यक्रम रद्द कर दिया गया।

1970 के दशक के आरंभ में सोवियत संघ को अमेरिका से मजबूरन खाद्यान्न आयात करना पड़ा। पश्चिम से (जहां वित्तीय रूप से मजबूत देश थे) खाद्यान्न और हल्के औद्योगिक आयात से कुल मिलाकर 1975 तक 10 बिलियन डॉलर का भुगतान रूपी असंतुलन तथा घाटा कायम हो गया। पश्चिमी बैंकों से कर्ज लेकर यह वित्त प्राप्त किया गया था। आयात को कम किया गया और घाटे को समाप्त किया गया परंतु 1982 तक पश्चिमी खेमों का ऋण 81 बिलियन डॉलर था और इसका ऋण सेवा अनुपात 100 % था जिसका मतलब यह हुआ कि वे केवल ऋण चुकाने के लिए ऋण ले रहे थे। 1980 के दशक के मध्य में पूरे विश्व में तेल के मूल्य में कमी आने से सोवियत की निर्यात आय भी कम हुई। इसके अलावा घरेलू दबावों के कारण आयात प्रतिबंधों को भी कम करना पड़ा। अत: सोने को बेचकर व्यापार असंतुलन को कम कर दिया गया। पूर्वी यूरोपीय अर्थव्यवस्थाओं में पोलैंड सबसे बड़ा कर्जदार था और उस पर 35 बिलियन डॉलर का कर्ज था।

पूर्वी अर्थव्यवस्थाओं ने भारी उद्योग के क्षेत्र में काफी तेजी से प्रगति की थी पंरतु उनके पास उपभोक्ता वस्तुओं का अभाव था, कृषीय उत्पादन की कमी थी, सेना के रख-रखाव में निवेश के कारण यह स्थिति और भी विकट हो गई और 1980 के दशक के मध्य तक आते-आते एक गतिरोध और घरेलू संकट पैदा हो गया। इसके परिणामस्वरूप अन्तत: पश्चिमी तर्ज पर यहां भी मुक्त बाजार मॉडल अपना लिया गया।

बोध प्रश्न 2

1) पूंजीवादी यूरोप में आर्थिक विकास के चरणों पर पांच पंक्तियां लिखिए।

....

....

....

....

....

....

2) किन अर्थों में समाजवादी यूरोप का आर्थिक विकास पूंजीवादी यूरोप से अलग था। पांच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

....

32.4 युद्धोत्तर यूरोप में राजनीति

जैसा कि आप जानते हैं युद्ध के बाद यूरोप दो विजयी शक्तियों के बीच विभाजित हो गया। यूरोप समाजवादी और पूंजीवादी खेमे या भौगोलिक दृष्टि से पूर्वी यूरोप खेमे और पश्चिम यूरोप खेमे में विभाजित हो गया। यूरोप का यह विभाजन अर्थव्यवस्था के साथ-साथ राजनीति में भी हुआ। पिछले भाग में आपने पूर्वी और पश्चिमी खेमे में अपनाई जाने वाली विभिन्न आर्थिक पद्धतियों की जानकारी प्राप्त की। इस भाग में हम इन दो खेमों में अपनाई जाने वाली विभिन्न राजनैतिक पद्धतियों की जानकारी देंगे।

जहां तक राजनैतिक क्षेत्र का सवाल है पश्चिम यूरोप में कई प्रकार की राजनैतिक व्यवस्थाएं मौजूद थीं जिसमें चुने गए प्रजातंत्र से लेकर तानाशाही तक मौजूद थे। पूर्वी खेमे में अधिक एकरूपता और समानता थी। वहां विचारधारात्मक एकता थी। यहां की राजनैतिक व्यवस्था पर साम्यवादी दलों का नियंत्रण था। परंतु व्यवहार में यहां भी कुछ विभिन्नताएं दिखाई पड़ती थीं और कभी-कभी ये राजनैतिक व्यवस्थाएं शुद्ध साम्यवादी स्वरूप से थोड़ा बहुत हटकर भी होती थीं और कभी-कभी विरोध का स्वर भी सुनाई पडता था।

32.4.1 पूंजीवादी यूरोप

पश्चिमी यूरोप में, जिसने 'सामाजिक जनतांत्रिक' सर्वसम्मति को स्वीकार किया था , वामपंथी, मध्यमार्गी और दक्षिणपंथी दलों के बीच नाम मात्र का अंतर रखा गया था। परंतु विषय वस्तु और कार्यक्रम का अंतर काफी कम कर दिया गया। 1953 में ही संकीर्णतावाद के प्रबल प्रवक्ता विन्सटन चर्चिल को, कंजरवेटिव पार्टी द्वारा मिश्रित अर्थव्यवस्था स्वीकार किए जाने के बाद यह मानने को मजबूर होना पड़ा कि 'विभिन्न दलों में व्यावहारिक अन्तर इस बात का है कि वे उस पर किस तरह बल देते हैं।

'सामाजिक जनतांत्रिक सर्व सम्मति' का विचार अपने आप में केवल युद्धोत्तर काल में ही वैधता पा सका। यह संकीर्णवाद के मूलभूत तत्वों (निजी सम्पत्ति को सुरक्षित रखना) और उदारवाद (सीमित राज्य) को शामिल करने के सामाजिक जनतंत्र के युद्ध पूर्व कार्यक्रम जिसको काफी बदला गया था का व्यावहारकिता से जुड़ा हुआ रूप था। इस प्रकार सामाजिक जनतंत्र ने पूंजीवाद के कमशः सुधार की संभावना को त्याग दिया। इस पुनर्निर्मित

सामाजिक जनतांत्रिक प्रस्ताव को संकीर्णतावादियों द्वारा स्वीकार किया जाना भी मौजूदा सामाजिक और अन्तरराष्ट्रीय परिस्थितियों के अनुकूल ही था। इस प्रकार अवसर प्राप्त होते ही इस पर आधारित संरचना को ध्वस्त कर दिया गया।

इस सर्वसम्मति के कारण दक्षिण मध्य और वाम-मध्य समूहीकरण के स्थाई संयुक्त मोर्चे का निर्माण संभव हुआ। कभी-कभी कड़े चुनावी संघर्ष के तुरंत बाद वाम और दक्षिण ने भी मिलकर साझा सरकार बनाई। पश्चिमी यूरोप में ब्रिटेन को छोड़कर अधिकांश देशों में गठबंधन सरकार के गठन की प्रवृत्ति पाई जाती थी। यह प्रवृत्ति वहां भी पाई जाती थी जहां चुनाव प्रणाली अनुपातिक प्रतिनिधित्व पर आधारित नहीं थी। इस प्रकार की सरकार के बनने के पहले अक्सर नीतियों तथा प्राथमिकताओं और पदों के बंटवारे को लेकर चुनाव के बाद खींचतान चलती थी। स्कैनडिनेवियन गठबंधन सरकारें स्थाई थीं क्योंकि सामाजिक जनतांत्रिक दल राष्ट्रीय राजनीति से पूरी तरह जुड़े हुए थे। परंतु यहां भी सर्वसम्मति का अनुपात अलग-अलग था। ब्रिटेन में जहां गठबंधन राजनीति उभर नहीं पाई वहां 1959 से लेकर 1964 तक टोरी या कंजरवेटिव शासन रहा तथा वहां सार्वभौमिक कल्याण कार्यों को आघात पहुंचा। महाद्वीपीय सामाजिक जनतंत्र ने लेबर पार्टी के साथ तालमेल बैठाया किंतु ब्रिटेन में लेबर पार्टी के साथ ऐसा तालमेल संभव न हो सका। 1951 से पार्टी के अन्दर बेवनआइट के विरोध के उभरने के कारण ऐसी स्थिति सामने आई।

चुनावी प्रजातांत्रिक व्यवस्थाओं में इटली की राजनैतिक व्यवस्था एक अपवाद थी जहां की सरकार में काफी अस्थायित्व था और साम्यवादियों का बहुत दबदबा था। इस दृष्टि से यह चौथे फ्रांसीसी गणतंत्र के समान था जिसे डे गावले द्वारा स्थापित पांचवे फ्रांसीसी गणतंत्र के बाद भंग कर दिया गया था। इटली की सरकार में क्रिश्चिन डेमोक्रेटिक पार्टी का वर्चस्व था। इस पार्टी का आधार काफी बड़ा था जिसमें कई प्रकार की प्रवृत्तियों को स्थान मिला था। इसमें क्लर्को-फासीवाद जैसे दक्षिणवादी सिद्धांत और कैथोलिक कम्यूनिज्म जैसे वामपंथी सिद्धांत शामिल थे परंतु इसका गुरूत्व-केंद्र नरम संकीर्णतावादी गुट ही था। परंतु वामपंथियों के साम्यवादियों और समाजवादियों में विभाजन होने से इसे मदद मिली।

सोवियत खेमे के बाहर प्रमुख यूरोपीय देशों जैसे स्पेन, पुर्तगाल और ग्रीस में काफी समय तक तानाशाही बनी रही। 1970 के दशक तक इन देशों में चुनाव आधारित जनतंत्र की स्थापना नहीं की गई थी। ग्रीस में अमेरिका की सहायता से साम्यवादियों को परास्त करने के बाद 1967 तक अस्थिर सरकारें बनती और गिरती रहीं। इसके बाद सेना ने सत्ता अपने हाथ में ले ली। पंरतु जन असंतोष और गृह युद्ध के खतरे को देखते हुए अन्ततः फिर से नागरिक शासन बहाल करना पड़ा। आइबेरियन उपमहाद्वीप में स्पेन और पुर्तगाल दोनों ही युद्ध से अप्रभावित रहे अतः वहां युद्ध पूर्व स्थापित तानाशाही चलती रही और वहां अपेक्षाकृत निरंकुश और अलगाववादी नीतियां चलती रहीं। 1975 में फ्रांसीसको फ्रैंको की मृत्यु के बाद स्पेन में लम्बी तानाशाही का युग समाप्त हुआ और संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना की गई। पुर्तगाल में सेना के उग्र सुधारवादी गुट के हस्तक्षेप से कई क्रांतिकारी घटनाएं घटीं और उसके बाद समाजवादी दल के नेतृत्व में चुनी गई नागरिक सरकार की स्थापना हुई। पूर्व साम्राज्यिक देशों में औपनिवेशीकरण ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में राजनैतिक संकट पैदा किया। फ्रांस में हिंद-चीन और अल्जेरियाई युद्धों के कारण ऐसा संकट पैदा हुआ जिसने चौथे गणतंत्र को हिला कर रख दिया। 12 वर्षों के शासन काल में 23 सरकारें बनाई गईं और अन्ततः 1958 में चौथे गणतंत्र को भंग कर दिया गया और एक नया पांचवा गणतंत्र स्थापित किया गया जिसका स्वरूप कार्यकारिणी ने निर्धारित किया। बेल्जियम पहले से ही उत्तर-दक्षिण फ्लेमिश-बैलून विभाजन से और सम्राट लियोपोर्ड के भविष्य को लेकर अनिश्चितता जैसी उलझनों से ग्रस्त था। परंतु कांगों की स्वतंत्रता के फलस्वरूप आर्थिक स्तर पर खर्च में कटौती जैसे कठोर उपाय लागू किए गए जिसके कारण 1960-61 में हड़ताल हुई। पुर्तगाल में, गिनिया-बिसाऊ, अंगोला और मोजाम्बिक स्वाधीनता संग्रामों के परिप्रेक्ष्य में, 'नए राज्य' की तानाशाही के खिलाफ सैनिक विद्रोह हो गया जो 1930 के दशक से सत्ता में था। यहां तक कि ब्रिटेन ने भी अपने औपनिवेशिक क्षेत्रों को धीरे-धीरे मुक्त किया। 1956 में स्वेज नहर क्षेत्र में अपने साम्राज्यिक हितों की रक्षा के लिए अपनाई गई नीति के कारण प्रधानमंत्री एंथोनी एडेन को इस्तीफा देना पड़ा।

32.4.2 समाजवादी यूरोप

पश्चिम के विपरीत पूर्वी खेमे में आमतौर पर साम्यवादी दलों ने सत्ता पर एकाधिकार स्थापित किया था। पार्टी के भीतर रहकर और एक सीमा तक ही मतभेद व्यक्त करने की अनुमति थी और उसी के भीतर गहन सत्ता संघर्ष चलता रहता था। सोवियत संघ से स्वायत्ता की मात्रा कई कारकों पर आश्रित थी जिसमें लोकप्रिय

लामबंदी भी शामिल थी। पोलैंड में साम्यवादी शासन के आरंभिक चरण की शुरुआत व्लादिसस्लाव गोमुल्का ने राष्ट्रीय आंदोलन से की परंतु उसे भी दल से निष्कासित कर दिया गया। 1956 में पोजनान में सोवियत विरोधी दंगे हुए और सोवियत संघ से सहानुभूति रखने वालों को मार डाला गया। गोमुल्का सत्ता में आया और कठोर नियंत्रण में थोड़ी ढील दी गई। 1960 के दशक में इन अपेक्षाकृत उदारवादी प्रवृत्तियों को पुन: समाप्त कर दिया गया। पोलैंड में किसी न किसी रूप में बराबर असंतोष और विरोध किया जाता रहा। मजदूरों ने काम करने के परिवेश के खिलाफ दंगे किए और औद्योगीकरण के लिए वित्त मुहैया कराने के लिए जब खाद्य पदार्थों के मूल्यों पर से रियायत हटाई गई और उनके मूल्य बढ़े तब इन नीति के खिलाफ जनता ने प्रदर्शन किया। इन सब कारणों से गोमुल्का के स्थान पर एडवर्ड गेरेक सत्ता में आया। 1980 के दशक में खाद्यान्नों का मूल्य बढ़ने के कारण फिर से आंदोलन हुए। पोलिश राजनीति में एक नया कारक सामने आया। सरकार ने हड़ताली मजदूरों के सामने घुटने टेक दिए और पार्टी नियंत्रण से अलग संघ बनाने की उनकी मांग को मान लिया। उसके बाद सॉलिडारिटी नाम का एक स्वतंत्र मजदूर संघ बनाया गया। सौलिडरिटी के लंबे समय तक चले विरोध के कारण अन्तत: साम्यवादी दल का शासन समाप्त हो गया।

पूर्वी जर्मनी, चेकोस्लोवाकिया और हंगरी में आरंभ में सामाजिक नियंत्रण में ढील देने और सोवियत संघ से कुछ स्वायत्ता हासिल करने का प्रयास किया गया परंतु इसे कठोरता से दबा दिया गया। 1953 में पूर्वी जर्मनी में सोवियत विरोधी दंगे हुए जिसे सोवियत नेताओं ने दबा दिया। हंगरी में 1953 के बाद आमूल चूल आर्थिक और राजनैतिक सुधार किए गए। सबसे पहले 1955 में वहां के प्रधानमंत्री इमरे नेगी को हटाया गया। उसके बाद 1956 में एक सशस्त्र क्रांति द्वारा वह वापस आया और एक नई क्रांतिकारी सरकार की स्थापना हुई और अन्तत: सोवियत नेताओं के हस्तक्षेप से जेनोस कदार को सत्ता सौंप दी गई। चेकोस्लोवाकिया में एलेक्जेंडर ड्यूबेक के अधीन, जिसने एंटोनिन नोवोटनी को हटाया था, इसी प्रकार के सुधार का प्रयत्न किया गया परंतु वहां भी वर्साय संधि सेनाओं के हस्तक्षेप से यह प्रयत्न असफल रहा। निवेश और आधारभूत कच्चे मालों के लिए सोवियत संघ पर बुल्गारिया की निर्भरता के बावजूद रोमानिया और बुल्गारिया अपेक्षाकृत अधिक स्वायत्त थे। 1960 के दशक तक बुल्गारिया में अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में कुछ स्थानीय और निजी पहल की गई। परंतु बुल्गारिया पर चेकेस्लोवाक आक्रमण के बाद इन सुधारों को वापस ले लिया गया। 1970 के दशक तक बुल्गारिया ने पश्चिम के साथ व्यापार संबंध स्थापित कर लिए थे और 1980 में विदेशी निवेश के लिए अपनी अर्थव्यवस्था के द्वार खोल दिए थे। हालांकि रोमानिया आधारभूत सोवियत संरचना का हिस्सा बना रहा। परंतु 1960 के दशक तक आते-आते विदेश नीति के मामले में वह सोवियत संघ से अलग नीति अपनाने लगा। इसने न केवल चेकोस्लोवाकिया द्वारा आक्रमण की भर्त्सना की बल्कि पश्चिमी यूरोपीय देशों से व्यापारिक संबंध स्थापित किए और वहां से पूंजी और तेल प्राप्त किया। 1962-63 में बुल्गारिया और रोमानिया दोनों ने सोवियत संघ के इस प्रस्ताव का विरोध किया कि एक महा-राष्ट्रीय प्राधिकरण संघ कॉमेकॉन की स्थापना की जानी चाहिए जिसके द्वारा सभी सदस्य राज्यों के सामर्थ्य के अनुसार कुछ क्षेत्रों में उनकी विशेषज्ञता को बढ़ावा दिया जाएगा।

अल्बेनिया और युगोस्लाविया दोनों हालांकि यूरोपीय साम्यवादी दुनिया के हिस्से थे परंतु वे साम्यवादी दुनिया से जितने दूर थे उतने ही एक दूसरे से भी दूर थे। अल्बेनिया आरंभ में सोवियत प्रभाव क्षेत्र का एक हिस्सा था परंतु 1958 तक आते-आते इससे अलग होने लगा। 1968 में इसे कॉमेकॉन और वार्सा संधि दोनों से निष्कासित कर दिया गया। इसने अपने आपको बिलकुल अलग कर लिया और यहां आत्मकेंद्रित व्यवस्था स्थापित हो गई। 1990 के दशक तक पूर्व और पश्चिम खेमें के प्रति इसका रवैया विद्वेषपूर्ण रहा। 1948 में युगोस्लाविया ने मास्को की अवहेलना की और स्टालिन ने 'भ्रात्रीय साम्यवादी दलों के परिवार' से इसे निष्कासित कर दिया। हालांकि 1953 के बाद कूटनीतिक और आर्थिक संबंध फिर से स्थापित किए गए। राजनैतिक स्वतंत्रता के परिणामस्वरूप युगोस्लाविया की राजनैतिक और आर्थिक व्यवस्था पूर्वी खेमे में सबसे ज्यादा विकेंद्रित थी और अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में इसने अपनी विदेश नीति के अंतर्गत गुट निरपेक्षता का समर्थन किया।

1980 के दशक के अन्त में घरेलू संकट इस हद तक बढ़ गया कि दमन के परम्परागत तरीके अप्रभावी सिद्ध होने लगे। सोवियत संघ में कुछ हद तक सुधार लागू किए जाने के कारण शेष साम्यवादी खेमे में जो कि पुनर्सृजित नहीं हुआ था, विरोध और असंतोष का स्वर सुनाई पड़ने लगा तथा। 1990 में रोमानिया से इसकी शुरुआत

हुई। इसके बाद पूर्वी खेमे का मौजूदा राजनैतिक ढांचा ध्वस्त हो गया और बहुदलीय चुनावों के आधारों पर नई व्यवस्था कायम की गई। अलगाववादी दबावों के कारण बहुजातीय देशों का विभाजन हुआ और उनकी राष्ट्रीय सीमाएं दोबारा निर्धारित की गईं। दूसरी ओर जर्मन डेमोक्रेटिक रिपब्लिक को फेडरल रिपब्लिक जर्मन में मिला दिया गया।

बोध प्रश्न 3

1) पश्चिमी यूरोपीय देशों में विकसित राजनीति की प्रकृति पर पांच पंक्तियां लिखिए।

....

....

....

....

....

....

2) पश्चिम खेमे और पूर्वी खेमे की राजनीति में क्या अंतर है। पांच पंक्तियों में अपना उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

....

32.5 सारांश

20वीं शताब्दी में यूरोप तीन प्रमुख विचारधाराओं (उदारवादी जनतंत्र, फासीवाद, समाजवाद) में विभाजित हो गया जो एक दूसरे से भिन्न और अलग थीं। युद्ध के अंतिम चरण में दो विचारधाराओं ने (उदारवादी जनतंत्र और समाजवाद) तीसरी विचारधारा (फासीवाद) के खिलाफ गठजोड़ कर लिया। युद्ध में तीसरी विचारधारा की हार के बाद उदारवादी जनतंत्र और समाजवाद के बीच का गठबंधन टूट गया और नई दुनिया में अधिक हिस्सेदारी प्राप्त करने के लिए उनके बीच कड़ी प्रतिद्वंद्विता को आमतौर पर 'शीत युद्ध' के नाम से जाना जाता था। 'शीत युद्ध' के समय पूर्वी और पश्चिमी खेमे ने अलग प्रकार के आर्थिक और राजनैतिक स्वरूपों को मजबूती प्रदान की। आर्थिक क्षेत्र में पूर्वी यूरोपीय देशों (समाजवादी खेमा) ने राज्य के नियंत्रण में भारी उद्योगों के निर्माण पर अपना ध्यान केंद्रित किया और सामूहिक खेती की शुरुआत की। विभिन्न देशों में इस व्यवस्था में थोड़ा बहुत अंतर भी था। दूसरी ओर पश्चिमी यूरोपीय देशों (पूंजीवादी खेमे) के आर्थिक विकास को अमेरिका ने वित्त प्रदान किया और उन पर अपना नियंत्रण भी रखा। युद्ध के बाद आर्थिक पुनरूत्थान के पश्चात उन अर्थव्यवस्थाओं में अभूतपूर्व तेजी आई जिसके कारण ये देश समृद्धि की ऊंचाई छूने लगे। राजनैतिक क्षेत्र में पश्चिमी देशों में चुनावी जनतंत्र से लेकर तानाशाही तक कई प्रकार की राजनैतिक व्यवस्थाएं कायम थीं। दूसरी ओर पूर्वी देशों में अधिक एकरूपता थी और सोवियत संघ का उन पर किसी न किसी रूप में नियंत्रण था। इन देशों ने पश्चिमी यूरोप के बहुदलीय शासन से अलग एकदलीय पार्टी व्यवस्था स्थापित की।

इस प्रकार युद्ध-पूर्व काल के दौरान यूरोप का 'त्रि विचारात्मक विभाजन' 'शीत युद्ध' के चरण में तब्दील हो गया जहां बिना कोई वास्तविक युद्ध लड़े दो शक्तियां एक दूसरे के खिलाफ प्रतिस्पर्द्धा करने लगीं। इन दो 'व्यवस्थाओं' ने लगभग 50 वर्षों तक आर्थिक, राजनैतिक और सैनिक सर्वोच्चता के लिए एक दूसरे से प्रतिस्पर्द्धा

की। 1980 के दशक में समाजवादी खेमे के अकस्मात अंत और पूंजीवादी विश्व से सफलतापूर्वक प्रतिस्पर्द्धा न कर पाने के कारण शीत युद्ध का दौर समाप्त हो गया।

32.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए उपभाग 32.2.5

2) देखिए उपभाग 32.2.1

बोध प्रश्न 2

1) अपने उत्तर में आप अमेरीका की भूमिका, आरंभ में कीमतों में गिरावट की नीतियां अपनाने से आई आर्थिक तेजी और अन्ततः पूंजीवादी यूरोप में आर्थिक सर्वसम्मति के उद्भव की चर्चा कीजिए। देखिए उपभाग 32.3.1

2) अपने उत्तर में निम्नलिखित बिंदुओं पर प्रकाश डालिए:

   क) अमेरिका और सोवियत संघ की अपने-अपने खेमे में भूमिका;

   ख) समाजवादी खेमे में कृषि के सामूहीकरण का प्रयत्न; और

   ग) भारी उद्योग और सैनिक निवेश में समाजवादी अर्थव्यवस्थाओं द्वारा की गई प्रगति। देखिए उपभाग 32.3.2

बोध प्रश्न 3

1) देखिए उपभाग 32.4.1

2) देखिए भाग 32.4

इस खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें

ए.जे.पी टेलर, *द स्ट्रगल फॉर मास्टरी इन यूरोप*

ए.जे.पी टेलर, *द ऑरिजिन्स ऑफ द सेकेंड वर्ल्ड वार*

डेविड थॉमसॉन, *यूरोप सिन्स नेपोलियन*

ई.जे. हैब्सबॉर्न, *द एज ऑफ एक्सट्रिम्स*

स्टिफेन, जे.ली, *आसपेक्ट्स ऑफ यूरोपीयन हिस्ट्री, 1789-1980*

परिशिष्ट

यूरोपीय इतिहास की प्रमुख घटनाएं

सप्तवर्षीय युद्ध	1756 से 1763
अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम	1776
इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति	1760
फ्रांसीसी क्रांति	1789 से 1815
नेपोलियन बोनापार्ट का शासन	1799 से 1815
वियेना कांग्रेस	1814 से 1815
यूरोप सम्मेलन	1815 से 1825
जुलाई क्रांति	1830
फरवरी क्रांति	1848
मेटरनिख युग	1815 से 1848
क्रीमिया युद्ध	1853 से 1856
नेपोलियन III और दूसरा फ्रांसीसी गणतंत्र	1848 से 1870
पेरिस कम्यून	1871
तीसरा गणतंत्र	1875 से 1914
इटली का एकीकरण	1850 से 1870
जर्मनी का एकीकरण	1850 से 1871
नया जर्मनी	1871 से 1918
बिस्मार्क का शासन	1870 से 1890
कैसर विलियम शासन	1888 से 1918
जर्मन गणतंत्र	1918 से 1932
रूस	1815 से 1917
जार एलेक्जेंडर I	1801 से 1825
निकोलस I	1825 से 1855
जार एलेक्जेंडर II	1855 से 1881
जार एलेक्जेंडर III	1881 से 1898
निकोलस II	1894 से 1917
बालकन युद्ध	1912 से 1913
प्रथम विश्व युद्ध	1914 से 1918
पेरिस शांति	1919
वर्साय संधि	1919

विश्व युद्ध		
	रूस में बॉलशेविक क्रांति	1917
	लीग ऑफ नेशन्स: लोकार्नो संधि: जेनेवा प्रोटोकॉल-1924, केलॉन्ग-ब्रैन्ड संधि 1928, निरस्त्रीकरण, 1932।	1922
	मुसोलिनी का शासन	1922 से 1943
	लेनिन का शासन	1917 से 1924
	यूरोप में आर्थिक मंदी	1929 से 1933
	हिटलर और नाजी जर्मनी	1919 से 1939
	स्टालिन और रूस	1928 से 1953
	रोम-बर्लिन-टोकियो-धुरी	1937
	म्यूनिख संधि	1938
	तीसरा राइख	1933 से 1939
	कमाल पाशा (तुर्की)	1919 से 1939
	दूसरा विश्व युद्ध	1939 से 1945
	शीत युद्ध की शुरुआत	1947
	ट्रूमैन सिद्धांत	1947